ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multi-Disciplinary e-Journal

Bi-Monthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 3 Issue 4 August 2017

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multi-Disciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

गिरिराज किशोर की कृतियाँ एवं मानवीय संवेदनाएं: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अजीत पाल
शोधकर्ता, अवधेश प्रताप सिंह विश्विद्यालय
रीवा, मध्य प्रदेश

Abstract

गिरिराज किशोर हिंदी साहित्य के एक ऐसे सितारे हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं रूपी प्रकाश पुंज से हिंदी साहित्य के फलक को न केवल रोशन किया है अपितु इन्होंने असंख्य नये सितारों को भी अपनी प्रेरणा से देदीप्यमान किया है। इनका जन्म 8 जुलाई 1937 को मुजफ्फररनगर, उत्तर प्रदेश में एक जमींदार परिवार में हुआ और इन्होंने एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, कथाकार, नाटककार एवं आलोचक के रूप में एक अद्‌वितीय मिशाल कायम की। इनके पिता एक ज़मींदार थे। बचपन में ही इनकी माँ का देहांत हो जाने के कारण इनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। गिरिराज किशोर के उपन्यासों एवं कहानियों में मानवीय संवेदनाएं कूट-कूट कर भरी हुई हैं। इनकी कथाओं में मानवीय जीवन मूल्यों की अप्रतिम छाप सहज ही देखने को मिलती है। गिरिराज किशोर ने समसामयिक मुद्दों पर भी बहुत ही प्रभावी निबंध अनेक पत्रिकाओं में प्रकाशित किये हैं। इनका उपन्यास 'ढाई घर' बहुत ज्यादा लोकप्रिय रहा और इसी उपन्यास के लिए उनको 1992 में 'साहित्य अकादमी पुरूस्कार' से भी सम्मानित किया जा चुका है। इनकी कहानियां जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में गिरिराज किशोर के जीवन वृत्त के साथ-साथ उनकी रचनाओं में मानवीय जीवन मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्यन किया गया है।

Key-Words

गिरिराज किशोर, कृतियाँ, जीवन मूल्य, मानवीय संवेदनाएँ, जीवन वृत्त।

The Expression: An International Multi-Disciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

गिरिराज किशोर की कृतियाँ एवं मानवीय संवेदनाएं: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अजीत पाल
शोधकर्ता, अवधेश प्रताप सिंह विश्विद्यालय
रीवा, मध्य प्रदेश

गिरिराज किशोर ने आगरा से मास्टर ऑफ़ सोशल वर्क की डिग्री सामाजिक विज्ञान संसथान से प्राप्त की है। वे 1966 से 1975 तक कानपुर विश्विद्यालय में सहायक एवं उप-कुलसचिव के पद पर रह चुके हैं। तदुपरांत वे 1983 तक आई.आई. टी. कानपपुर में रजिस्ट्रार के पद पर रहे। उनको अनेक सम्मान एवं फ़ेलोशिप भी प्राप्त हैं। उनको छत्रपति शाहूजी महाराज विश्विद्यालय, कानपुर द्वारा 2002 में डी. लिट्. की मानद उपाधि से भी विभूषित किया जा चुका है। सम्प्रति वे 'अकार' त्रैमासिक पत्रिका से समादक हैं एवं स्वतंत्र लेखक के रूप में कार्यरत हैं। एक दर्जन से अधिक उपन्यासों के इलावा उन्होंने दस कहानी संग्रह, चार निबंध संग्रह, सात नाटक, एक एकांकी एवं महात्मा गाँधी की जीवनी 'पहला गिरमिटिया' लिखी है। उनको 2007 में राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री पुरुस्कार साहित्य और शिक्षा हेतु मिला हुआ है।

गिरिराज किशोर का उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' 1999 में आठ वर्षों की मेहनत एवं अन्वेषण के बाद प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास गाँधी जी के जीवन से संबधित है और गिरिराज ने भी उपन्यास लिखने के दौरान दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस और इंग्लैंड की यात्रा की ताकि वह इस उपन्यास के लिए सामग्री जुटा सकें। महात्मा गाँधी इस उपन्यास के नायक हैं और इस पुस्तक को पढ़ते हुए हमें यह आभास होता है मानो गिरिराज ने महात्मा गाँधी को निकट से देखा हो। इस उपन्यास में उन्होंने गोरों के द्वारा अश्वेत लोगों पर किये गये अत्याचारों को भी एक शीर्ष स्थान दिया है। गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। दक्षिण अफ्रीका में तुच्छ कार्यों जैसे कृषि एवं मजदूरी आदि के लिए कर्मियों की आवश्कता की पूर्ति हेतु अंग्रजों ने भारतीय मूल के निवासियों को वहां पर पांच साल के अनुबंध के लिए अफ्रीका

भेज दिया। वहां जाने वाले मजदूर ही गिरमिटिया कहलाये। पहली बार 1860 में भारतीय लोग काम की तलाश में वहां पर गये। यूरोपीय गोरे भारतीय मजदूरों से घृणा करते थे और उनको 'काल कुली' कहते थे। वस्तुतः भारतीय लोगों को कुली के नाम से जाना जाने लगा था। गाँधी जी ने मानव संवेदनाओं को प्राथमिकता देते हुए दक्षिण अफ्रीका में भारतियों के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ जंग की शुरुआत की। गाँधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में बीस सालों तक भारतीयों के अधिकारों की रक्षा हेतु बिगुल बजा दिया और ये गाँधी जी ही थे जिन्होंने इन गिरमिटियों को एक सम्मानजनक स्थान दिलाया। गिरिराज किशोरे का नाम एक कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने मात्र छह-सात वर्ष की आयु में ही अपनी पहली कहानी लिखी थी। तदुपरांत उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और वे अब तक कई कहानी संग्रह प्रकाशित कर चुके हैं। 'नीम के फूल', 'चारमोती बेआब', 'पेपरवेट', 'यह देह किसकी', 'रिश्ता और अन्य कहानियां', 'हम प्यार कर लें', 'रिश्ता और अन्य कहानियां', 'गाना बड़े गुलाम अली खान का', 'वल्द रोजी', 'जगत्तारानी' आदि। इनकी कहानियों में संजीदगी है और इनको मात्र मनोरंजन हेतु नहीं लिया जा सकता। गिरिराज किशोर का प्रथम कहानी संग्रह "नीम का फूल" है जिसके बारे में गिरिराज किशोर ने लिखा है, "कहानी मुझे सबसे ज्यादा जीवंत विधा लगती है। इसको वही वहां कर सकता है जो अपनी जटाएंखुली रखे। कहानी का सही रूप बंधे हुए कूपों में दिखाई नही पड़ेगा" (वैचारिकी १९८६)

गिरिराज किशोर की कहानियों में विषय-वैविध्य सहज ही देखने को मिलता है। इनका प्रथम कहानी संग्रह नीम का फूल १९६४ में प्रकाशित हुआ जिसमें 'तार द्वारा वापसी', जिंदगी के पीछे', 'कलम-कांटे और फूल', 'अंतहीन राहें', 'कांटे और फूल' आदि कहानियों में मानव जीवन मूल्यों का यथार्थ रूप देखने को मिलता है। 'तार द्वारा वापसी' और 'कलम कांटे और फूल' कहानियों में वक्त के साथ-साथ लोगों के जीवन मूल्यों में किस तरह से बदलाव आता जा रहा है, यह बात स्पष्ट रूप में देखने को मिलती है । लोगों का महानगरों के प्रति आकर्षण एवं खोखले रिश्तों की पृष्ठभूमि इन कहानियों में सहज ही दिखाई देती है। लोग नज़दीक रहकर भी पराये ही रहते है और किस तरह अपने बनकर बेगानों-सा बर्ताव करते हैं। उनकी कहानी 'पीली पत्तियां नीम की' जीवन में प्रेम रस से सराबोर करने वाली एक कहानी है। 'जिन्दगी के पीछे' कहानी यह सन्देश देती है कि काम भावना नैसर्गिक है और जीवन की एक अनिवार्यता भी ।

किशोर का 'चार मोती बेआब' गिरिराज किशोर के लेखन काल के शुरूआती दौर में लिखा गया कहानी संग्रह है। यह कहानी संग्रह १९६४ में प्रकाशित हुआ था। यह कहानी संग्रह भी मानव जीवन के विभिन्न ऐसे कालखंडो का निरूपण करता है जिनमें निम्वार्गीय लोगों की यातना, मजबूरी, दम तोड़ती हुई उम्मीद, चकनाचूर ख्वाब एवं बदहाली की तस्वीर उजागर करता है। यह कहानी संग्रह अनैतिक सम्बंधों की गाथा व्यक्त करता है। 'हंसी के पार' कहानी विवाहेत्तर संबंधों की नारी की इच्छा के कारण अपराधबोध का चित्रण करती है। इसके विपरीत कहानी 'वह थी फाख्ता' विवाह से पहले के सम्बंधों की यादों के बारे में है। गिरिराज किशोर ने हमारे समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों पर भी कुठाराघात किया है। 'एक ईश्वर की मौत' कहानी धर्म और अंधविश्वास पर एक कड़ा व्यंग है।

१९६७ में गिरिराज किशोर का प्रसिद्ध कहानी संग्रह पेपरवेट प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने राजनीति पर आक्षेप किया है । विकृत मानसिकता, जड़ता, हताशा और निराशा का चित्रण भी इस कहानी संग्रह में मिलता है। कार्यालयों की अनियमितताओं पर भी उन्होंने आक्षेप किया है और दफ्तरी बाबुओं के भ्रष्ट तंत्र पर भी व्यंग्य किया है कि किस तरह से ये लोग जीवन में दूसरों से कुछ पाने की उम्मीद नही छोड़ते और तब तक कर्मचारिओं के कामों को लटकाते रहते है। 'पेपरवेट' और 'नया चश्मा' कहानियां इन तथ्यों को बखूबी उजागर करती हैं। इस संग्रह की कहानी 'चूहे' इस बात को उजागर करती है कि किस तरह से बुजुर्ग लोग नई पीढ़ी पर हमेशा अंकुश लगाने की कोशिश करते रहते हैं और कहीं न कहीं अपनी पीढ़ी के गुणों का बखान और नई पीढ़ी में दोषारोपण करते रहते हैं। 'फ्रांक वाला घोड़ा' और 'निकरवाला साईस' जीवन की उम्मीदों पर आधारित है और मनुष्यों की कभी न ख़त्म होने वाली इच्छाओं की गाथा व्यक्त करती हैं। इन कहानियों में उन्होंने विवाहेत्तर सम्बंधों का चित्रण किया है। अतः यह कहानी संग्रह भी जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालती है।

गिरिराज का कहानी संग्रह 'रिश्ता और अन्य कहानियां' १९६८ में प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह की कहानी 'रेप' राजनेताओं द्वारा की गयी कारगुजारियों का चित्रण करती है। 'गाउन' कहानी महानगरीय लोगों के द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण के बारे में है । गिरिराज किशोर ने जीवन में हाई लाइफ स्टाइल का अनुसरण करते हुए लोगों का चित्रण इस कहानी संग्रह में बखूबी किया है। 'रिश्ता' कहानी बेबाक चित्रण करती है कि किस तरह से इस कहानी की नायिका अपना जिश्म बेचने को मजबूर हो जाती है। इनकी कहानी 'शीर्षकहीन' में एक पत्नी अपने पति से दिल से नही जुड़ पति है और वो अपने पति के मित्र से आकृष्ट होकर उससे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लेती है। चेहरे कहानी महानगरीय जीवन में पाश्चात्य संकृति के प्रति आकर्षण के बारे में है।

गिरिराज किशोर का कहानी संग्रह 'शहर-दर-शहर' १९७६ में प्रकाशित है और इसमें निम्न एवं उच्च वर्ग के भेद का वर्णन किया गया है । उच्च वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों के प्रति घृणा से देखते हैं और उनके साथ पशुवत व्यव्हार करते हैं। 'मवेशी' कहानी काफी विवादित है और इस कहानी में लेखक के आपातकाल के दौरान इंदिरा गाँधी के प्रति दी गयी टिप्पणी के बारे में काफी विवाद हुआ । यह कहानी संग्रह अफसरशाही के बारे में बहुत ज्यादा बयान करता है। 'चिमनी' कहानी एक ईमानदार पुलिस अधिकारी की कहानी है जिसको अपनी ईमानदारी के कारण बहुत ज्यादा परेशानी उठानी पड़ती है। शासन तंत्र में भ्रष्टाचार के व्याप्त होने के बारे मन यह कहानी है जिसमें ईमानदार पुलिस अधिकारी अपना मानसिक संतुलन भी खो बैठता है। इसमें कहानी 'लिफाफे' भ्रष्टाचार और घुसखोरी के बारे में है। 'क्लर्क' कहानी भी इसी विषय-वस्तु के इर्द-गिर्द घुमतीहै।

'हम प्यार कर लें' कहानी संग्रह की कहानी 'मंत्रीपद' आज के दौर में मंत्रियों के द्वारा की गयी मनमाफिक कार्यों के बारे में है और राजनीति में व्याप्त गुंडागर्दी के बारे में है। 'हम प्यार कर लें' कहानी युवा वर्ग की शारीरिक भूख के बारे में है कि किस तरह से बाढ़-पीड़ित युवा बाढ़ के दौरान भूखे रहते हुए भी शरीर की

भूख मिटाने से बाज नहीं आते । जगत्तारानी और अन्य कहानियां १९८१ में प्रकाशित हुआ और इसके बाद 'गाना बड़े गुलाम अली खान का' कहानी संग्रह १९८६ में प्रकाशित हुआ। 'गुनाहगार', 'पांचवा परांठा' 'खरबूजे' और 'वह हंसा क्यों नहीं' इस कहानी संग्रह की मुख्य कहानियां हैं। इस कहानियों में जीवन के संघर्ष की कहानी है।

गिरिराज किशोर का अगला कहानी संग्रह 'वल्द रोजी' है जो १९८९ में प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह की मुख्य कहानी 'वल्द रोजी' है जिसमें उन्होंने रोजी को ही बहुत कुछ माना है। 'प्रत्यावर्तन' कहानी जीवन परिवर्तन के इर्द-गिर्द घुमती है जिसको हम सामान्यतः स्वीकार करने में बहुत ज्यादा पपरेशान हो जाते हैं। किशोर का कहानी संग्रह 'यह देह किसकी है' मुख्य रूप में जीवन के कटु सत्यों पर प्रकाश डालती है। इस संग्रह की कहानी 'रंजन के जूते' पुरातन पीढ़ी एवं नूतन पीढ़ी के विचारों के अंतर के बारे में बताती है। इस कहानी में पुरानी पीढ़ी की कुत्सित और निम्न मानसिकता का विवरण है।

'आंद्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियां' कहानी संग्रह १९९४ में प्रकाशित हुआ था। इस कहानी संग्रह की कहानी 'नीम के फूल' जीवन की कड़वाहट के बारे में है। यह संग्रह जाति, संप्रदाय, धर्म, राजनीति, आतंकवाद आदि विषयों पर चिंतन करती है।

गिरिराज किशोर मुख्यतः एक उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं परन्तु उनकी कहानियां भी हिंदी साहित्य में एक विशेष स्थान रखती हैं। वे कहते हैं, "साहित्य में उन सारी बैटन का जीवन विवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है"। (साहित्य सहचर्य १३) गिरिराज किशोर के उपन्यास हों या उनकी कहनियाँ यह कहा जा सकता है कि उन्होंने मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं में शीर्ष स्थान दिया है और उनकी कहानियां समाज में व्याप्त कुप्रथाओं पर भी एक गहरी चोट करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि:

गिरिराज किशोर, १९६४, नीम का फूल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९६५, चार मोती बेआब, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९६७, पेपरवेट, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९६८, रिश्ता एयर अन्य कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९७६, शहर-दर-शहर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९८०, जत्तारानी और अन्य कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
गिरिराज किशोर, १९८९, वल्दरोजी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य सहचर्य, पृष्ठ १३
गिरिराज किशोर, वैचारिणी सं. मणिका मोहिनी, अंक अगस्त १९८६